पंचगव्य

अमृत

वेदों में पंचगव्य का उल्लेख किया गया है. सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, भावप्रकाश, रानिघुंट, अमृतसागर, आरोग्य ज्ञानको-ा, द्रव्यगुण शास्त्र, हिंदुस्तान का वैद्यराज, बृहद वाग्भटट, अ-टांग संग्रह आर्यभि-ेक आदि आयुर्वेद ग्रंथों में पंचगव्य के औ-ाधिय गुणों के बारे में वर्णन है.

महापंचगव्य

महापंचगव्य के बारे में भी वर्तमान में विश्व में जागृति उत्पन्न हो गयी है.

कामधेनु का साक्षात वरदान

पंचगव्य मानव के लिए वर्तमान में कामधेनु का साक्षात वरदान है. पंचगव्य पूरी तरह से सात्विक, पौ-टिक, सुपाच्य है. पंचगव्य से मानव का देह सोने के समान चमकने लगता है.

पंचगव्य में सूर्य की सभी शक्तियां उपस्थित हैं. पंचगव्य में 33 करोड़ देवताओं का आर्शीवाद है.

कायाकल्प

पंचगव्य के लगातार 6 माह तक सेवन करने पर मानव का कायाकल्प संभव है.

पंचगव्य वर्तमान में कामधेनु का दिया हुआ धरती का अमृत है. पंचगव्य मानव को मृत्यु से अमरत्व के लिए ले जाता है. अंधकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान तक पंचगव्य मानव को ले जाता है.

समाधान

कलियुग में पंचगव्य ही हर समस्या का समाधान है. भारत की ऋ-ि परम्परा ने पंचगव्य की ओर विश्व का ध्यान आकर्-ित किया है.

जागरुकता

विश्व आज लंबे अनुसंधान के बाद में पंचगव्य के महत्व को बहुत ही अच्छी तरह से समझ चुका है. आने वाले समय में पंचगव्य ही सभी के लिए सबसे सरल उपाय है.

निरोगी तथा दीर्घायु

पंचगव्य के नियमित सेवन करने से मानव निरोगी तथा दीर्धायु रहता है.

पाचक रस

पंचगव्य पीने पर पाचक रसों के कारण ही थूक की लार तुरन्त ही बढ़ जाती है. पंचगव्य से पाचन अच्छा रहता है.

रक्तचाप सामान्य

पंचगव्य सेवन करने से खून की गति तुरन्त ही बढ़ जाती है. पंचगव्य के सेवन करने से रक्तचाप पूरी तरह से सामान्य रहता है.

5300 रसायन

विश्व में किये गये आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार पंचगव्य में 5300 से अधिक रसायन मौजूद हैं. विश्व में पंचगव्य पर बहुत सारे अनुसंधान किये गये हैं.

मैजिक लिक्वीड

विश्व में अब पंचगव्य को मैजिक लिक्वीड कहा गया है. पंचगव्य के परिणामों से विश्व बहुत अधिक प्रभावित है.

भारत में भी विश्व के विकसित देशों की तरह पंचगव्य को एक्सल लिक्वीड के नाम से लोकप्रियता मिली है.

पंचगव्य में सी.एल.ए., एम.डी.जी.आई., 22 प्रकार के अमिनों अम्ल, 11 प्रकार के स्नेह पदार्थ, 19 प्रकार के नाइट्रोजन, 25 प्रकार के धातु तत्व, 25 प्रकार के जीवन तत्व, 25 प्रकार के खनिज, 60 प्रकार के पाचक रस एवं अनेकों दिव्य रसायन मौजूद हैं.

पंचगव्य से प्राप्त दिव्य उर्जा ग्रहण करने के लिए मानव को तप करने की आवश्यकता है.

परिवर्तन

पंचगव्य सेवन करने से मानव में परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं. राक्षस मानव से पशु मानव, पशु मानव से मानव, मानव से देव मानव एवं देव मानव से दिव्य मानव के विकास का क्रम प्रारम्भ हो जाता है.

आने वाले 100 सालों में उल्लेखनीय परिवर्तन पंचगव्य के कारण दिखाई देंगे.

शुद्धि

पंचगव्य सेवन करने से मानव में आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आदिदैविक परिवर्तन होते हैं. मानव को मन की शुद्धि के कारण पूर्वाभास होने लगता है.

पंचगव्य का सेवन हर वैदिक कार्य के पूर्व में मन की शुद्धि के लिए किया जाता है. पंचगव्य का सेवन प्रायश्चित करने के लिए किया जाता है.

आवश्यक सामग्री

कामधेनु के दूध, दही, गोमय, गोमूत्र एवं धी से पंचगव्य तैयार किया जाता है.

पंचगव्य धी

पंचगव्य घी तैयार करने के लिए धर्मसिंधु के अनुसार एक भाग गोमय का रस, उसका दुगना गोमूत्र, उसका दुगना घी, उसका दुगना दूध एवं दही चाहिए.

पंचगव्य घी बनाने के लिए बहुत ही सावधानी की आवश्यकता है. समय कम से कम 3 दिन लगते हैं.

महापंचगव्य

पंचगव्य में 24 जड़ीबूटियां मिलाने पर महापंचगव्य बनता है.

महापंचगव्य धी

महापंचगव्य घी बहुत अधिक प्रभावशाली है. वर्तमान में आर्यवैद्यशाला कोटटकल केरल 110 सालों से तथा आर्यवैद्य फार्मास्यूटिकल्स कोयम्बतूर से बहुत बड़ी मात्रा में तैयार कर निर्यात कर रही है.

कामधेनु का दूध हल्का पीला होता है. धारो-ण दूध गरम तथा बहुत ही मीठा होता है.

दूध चांदी या मिटटी के पात्र में जमाने पर तैयार दही गुणकारी होती है.

बिलोने का घी

विशे-ा सावधानी यह रखनी हे कि बिलौने से मक्खन तैयार कर धी बनाया जाता है. बिलौने का धी जितना पुराना मिल सके उतना लाभकारी है.

पीला

कामधेनु का धी स्वर्णक्षार यानी कैरोटिन के कारण ही गाढ़ा पीला होता है. कामधेनु का घी उच्च गुणवत्ता के कारण ही कभी जमता नहीं है.

जीर्ण

10 साल पुराना घी जीर्ण कहलाता है. जीर्ण यानी महीन, सुक्ष्म, हल्का

कौम्भ

सुश्रुत संहिता के अनुसार 100 से 1000 साल पुराना घी कौम्भ कहलाता है. वर्तमान में बहुत ही सीमित मात्रा में प्रयोग करने के लिए मंदिरों के कलशों में सुरक्षित रखा गया है.

महाघृत

1100 साल से पुराना घी महाघृत कहलाता है. पुराना घी कड़ा हो जाता है. हल्का तथा सूक्ष्म होने के कारण बहुत ही प्रभावशाली है. दुर्लभ होने के कारण ही वर्तमान में विश्व में मंदिर के कलश में रखा गया है.

उपयोग

पंचगव्य का उपयोग मन की पवित्रता के लिए श्रावणी पूर्णिमा के दिन स्नान, पान करने के लिए अवश्य ही किया जाता है.

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा

पंचगव्य निर्माण में गोवंश का मूत्र, गोमय का उपयोग तथा गाय का दूध, दही, धी अनिवार्य है. मांग के कारण मूल्य बढ़ना निश्चित है. पंचगव्य से आर्थिक आधार पर 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

स्वरोजगार

भारत में वर्तमान में गांवों में लगभग 50 करोड़ युवाओं को स्वरोजगार के लिए पंचगव्य के निर्यात करने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है.

प्रशिक्षण

वर्तमान में श्री निरंजन वर्मा जी ग्राम कटटावाक्ककम, तालुका तिनेरी, जिला कांचीपुरम, तमिलनाडू कार्यालय गव्य नेचर क्योर रिसर्च सेंटर सीयू शाह भवन 78-79 रिचर्डन रोड वेपेरी चेन्नई 600007 1 साल का डिप्लोमा पंचगव्य पर दे रहे हैं.

छोटी, मध्यम, बड़ी गोशालायें भारतीय जीवजन्तु कल्याण बोर्ड चेन्नई के वित्तीय सहयोग से युवाओं को साल भर निःशुल्क प्रशिक्षण दे रही हैं.

प्रत्येक गांव में युवाओं के द्वारा कामधेनु के द्वारा पंचगव्य के निर्माण करने के लिए संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है.

प्रथम स्तर

पंचगव्य बनाने के पूर्व बहुत सावधानी की आवश्यकता है. गोवंश निरोगी होना अनिवार्य है. जैविक आहार तथा जल ही गोवंश को मिलना चाहिए. जंगल में स्वयं जड़ीबूटियां चरने वाली गायों को ही प्रयोग करने के लिए चयन करना है.

मूत्र तथा गोबर के लिए काली बछिया को ही प्राथमिकता देनी है.

काली गाय को विशे-ा उर्जा के कारण प्राथमिकता देनी है. कपिला गाय का विशे-ा महत्व है.

पंचगव्य बहुत ही कम लागत पर आसानी से बनाना संभव है. प्रथम स्तर पर कम से कम अपने आसपास के लोगों को नमूने के रुप में प्रयोग करने के लिए देने पंचगव्य का निर्माण किया जाता है.

द्वितीय स्तर

तृतीय स्तर

चतुर्थ स्तर

पंचम स्तर